अब्दुल गफ्फार खान

(1890-1988)

हमारी आधुनिक दुनिया में, इस्लामी लोग शांतिपूर्ण होने के लिए प्रसिद्ध नहीं हैं. समाचारों में, इस्लामी आतंकवादियों और इस्लामी "पवित्र युद्ध" (होली-वॉर) के बारे में तमाम ख़बरें छपती है. इस्लामी नेताओं को अक्सर अपने लोगों को यहूदियों और "क्रूसेडर" (ईसाईयों) के खिलाफ हिंसा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए दिखाया जाता है.
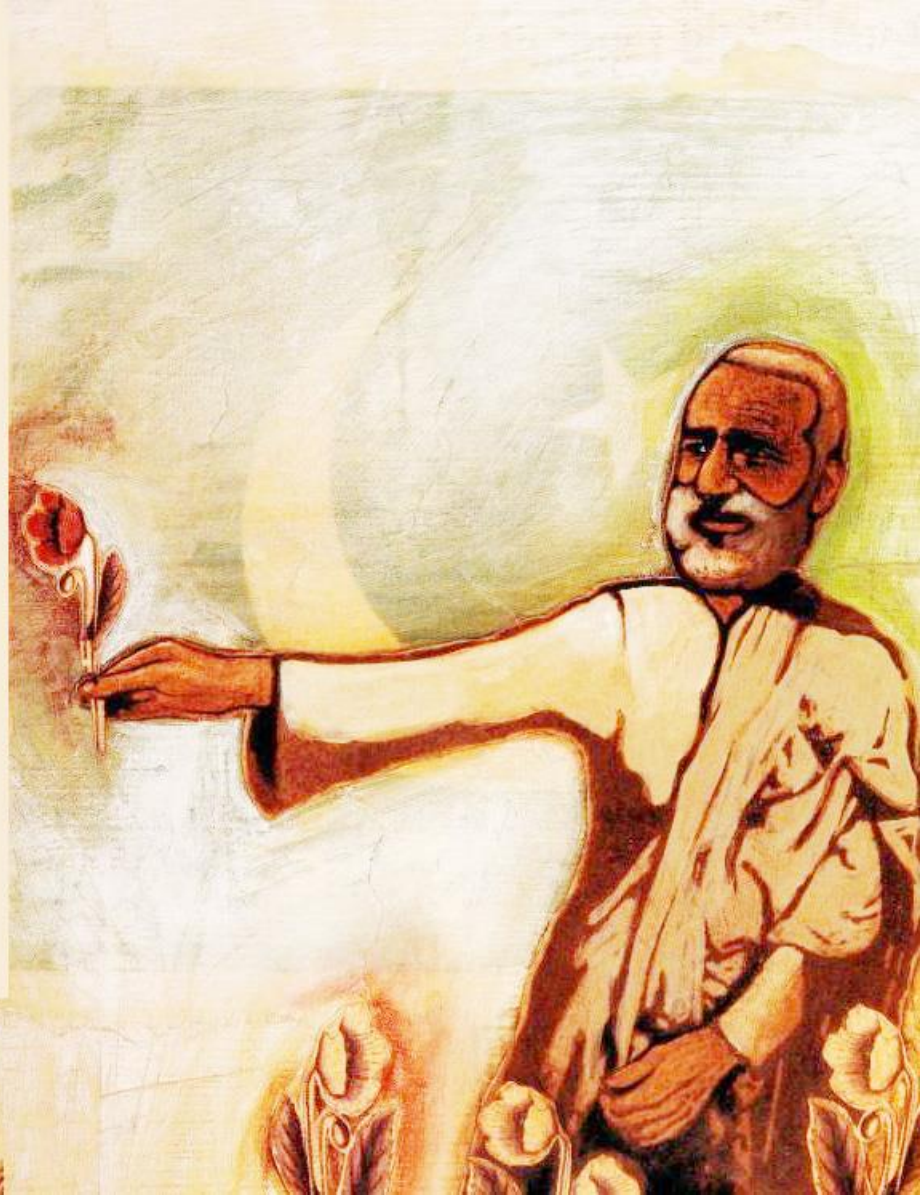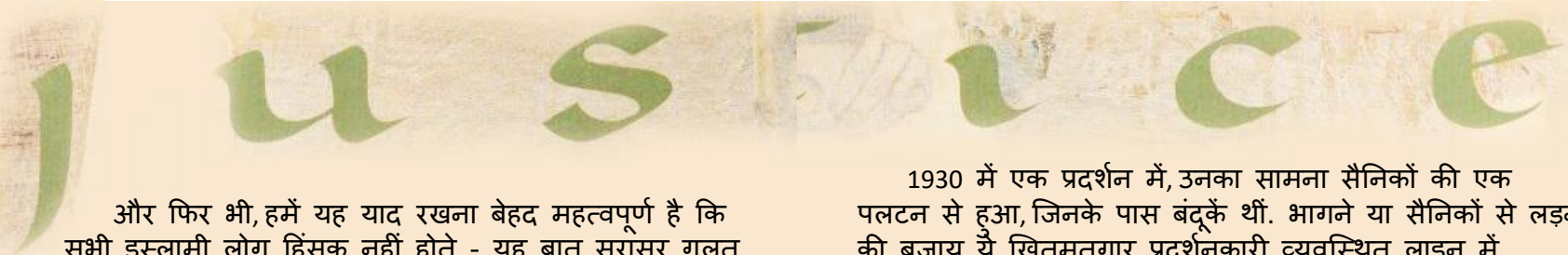
और फिर भी, हमें यह याद रखना बेहद महत्वपूर्ण है कि सभी इस्लामी लोग हिंसक नहीं होते - यह बात सरासर गलत है. वास्तव में, आधुनिक काल के सबसे शांतिपूर्ण नेताओं में से एक इस्लामी नेता थे: अब्दुल गफ्फार खान. खान एक गहरे धार्मिक व्यक्ति थे, और उनकी इस्लामी मान्यताओं ने ही, जीवन भर उनका मार्गदर्शन किया. उनका मानना था कि इस्लाम शांति का धर्म था. हालाँकि, इस विश्वास ने उन्हें न्याय के लिए लड़ने से कभी नहीं रोका. खान ने अपने लोगों, पश्तूनों की मदद करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया. पश्तून एक प्राचीन जाति है जो अब पाकिस्तान और अफगानिस्तान में रहती है. वे भी इस्लाम धर्म को मानते हैं. सदियों से पश्तूनों को, अधिक शक्तिशाली समूहों और राष्ट्रों ने धकेला था - विशेष रूप से, ग्रेट ब्रिटेन ने. इतिहास में ग्रेट ब्रिटेन ने न केवल भारत, बल्कि पाकिस्तान को भी जीता था और नियंत्रित किया था.

इस्लाम से प्रेरित होकर, खान ने ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के खिलाफ पश्तूनों के अधिकारों की रक्षा के लिए एक अहिंसक समूह का गठन किया. उन्हें "खुदाई खिग्मतगार" कहा जाता था. इसका अर्थ था "भगवान के सेवक." चूँकि यह समूह ईश्वर को शांतिपूर्ण मानता था, इसलिए वे खुद केवल शांतिपूर्ण प्रदर्शन करते थे.

1930 में एक प्रदर्शन में, उनका सामना सैनिकों की एक पलटन से हुआ, जिनके पास बंदूकें थीं. भागने या सैनिकों से लड़ने की बजाय, ये खितमतगार प्रदर्शनकारी, व्यवस्थित लाइन में सैनिकों की ओर धीरे-धीरे और शांति से बढ़ते रहे. सैनिकों ने प्रदर्शनकारियों पर तब तक गोलियां चलाईं जब तक कि वे और शूटिंग नहीं कर सकते थे. खान की महिला अनुयायी कभी-कभी अपने हाथ पकड़कर सड़क पर लेट जाती थीं. इस तरह के प्रदर्शनों से पुलिस को बहुत गुस्सा आता था. फिर पुलिस ने खान सहित अन्य शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों में से कई को गिरफ्तार किया प्रताड़ित किया और मार डाला. खान ने अपनी ज़िंदगी के तीस साल जेल में बिताये और एक बार वो पूरे पंद्रह साल की अवधि के लिए कैद में रहे.

सोजॉर्नर ड्रुथ की तरह, गफ्फार खान ने शांति और न्याय के अपने दोहरे संदेश का प्रसार करते हुए, एक शहर से दूसरे शहर तक पैदल यात्रा की. क्योंकि उन्होंने मुख्य रूप से पैदल यात्रा की, इसलिए वो शायद ही कभी पाकिस्तान के बाहर गए. शायद यह एक कारण हो सकता है कि वो अपने हिंदू मित्र और समकक्ष, गांधी जितने प्रसिद्ध नहीं हुए. गांधी ने पूरी दुनिया की यात्रा की. अक्सर "फ्रंटियर गांधी" कहे जाने वाले अब्दुल गफ्फार खान इससे कहीं अधिक थे. अब्दुल गफ्फार खान शायद हाल के इतिहास में इस बात का सबसे बड़ा सबूत हैं कि इस्लाम शांति को बढ़ावा दे सकता है.